चुका है, अर्जुन ने श्रीकृष्ण का चतुर्भुज विष्णुरूप देखना चाहा, विश्वरूप के दर्शन से तो वास्तव में उसे भय ही हुआ।

श्लोक में अनेक महत्त्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग है। **वेदयज्ञाध्ययनैः** शब्द से वेदों और यज्ञविधि के अध्ययन का निर्देश है। 'वेद' शब्द सम्पूर्ण वैदिक शास्त्रों अर्थात् ऋक्, साम, यजुः तथा अथर्व नामक चारों वेद, अठारह पुराण, उपनिषद् , ब्रह्मसूत्र आदि शास्त्रों का वाचक है। इनका स्वाध्याय घर पर अथवा अन्यत्र कहीं भी किया जा सकता है। इसी प्रकार, यज्ञविधि के अध्ययन के लिए 'कल्पसूत्र' और 'मीमांसासूत्र' हैं। **दान** शब्द से भगवद्भक्तिपरायण ब्राह्मण, वैष्णव आदि सत्पात्रों के लिए किये जाने वाले द्रव्य-त्याग का उल्लेख है। अग्निहोत्र आदि पुण्यकृत्य विभिन्न वर्णों के स्वधर्म हैं। पुण्य क्रियाओं का संपादन और स्वेच्छा से शारीरिक कष्ट सहन करना **तपस्या** है। ये सब कर्म किए जा सकते हैं; परन्तु जो अर्जुन जैसा भक्त नहीं है, वह ऐसा करने पर भी विश्वरूप का दर्शन नहीं कर सकेगा। निर्विशेषवादी कल्पना करते रहते हैं कि उन्हें प्रभु के विश्वरूप का दर्शन हो रहा है; पर भगवद्गीता के अनुसार निर्विशेषवादी भक्त नहीं हैं, अतः उन्हें विश्वरूप का दर्शन वस्तुतः हो ही नहीं सकता।

अनेक ऐसे मनुष्य भी हैं, जो अवतारों को रचते हैं। धूर्ततापूर्वक साधारण मनुष्य को अवतार घोषित करके वे अपनी मूर्खता का परिचय देते हैं। हमें भगवद्गीता के सिद्धान्तों का दृढ़तापूर्वक अनुगमन करना होगा, अन्यथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। वैसे तो भगवद्गीता भागवत-विद्या की भूमिका ही मानी जाती है, फिर भी यह अपने में इतनी पूर्ण है कि इससे तत्त्वज्ञान हो सकता है। कपट-अवतार के अनुयायी भले ही कहा करें कि उन्होंने भी श्रीभगवान् के चिन्मय अवतार और विश्वरूप का दर्शन किया है; परन्तु इसे सत्य नहीं माना जा सकता, क्योंकि यहाँ स्पष्ट उल्लेख है कि श्रीकृष्ण का भक्त बने बिना विश्वरूप का साक्षात्कार नहीं हो सकता। इसलिए पहले शुद्धकृष्णभक्त बनना होगा, इसके बाद ही कोई विश्वरूप को देखने का दावा कर सकता है। सच्चा कृष्णभक्त मिथ्या अवतार अथवा उसके अनुगामियों को कभी स्वीकार नहीं करता।

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य॥४९॥

मा=न हो; **ते**=तुझे; **व्यथा**=व्याकुलता; **मा**=न हो; **च**=तथा; **विमूढभावः**=मोह; **दृष्ट्वा**=देखकर; **रूपम्**=रूप; **घोरम्**=भयंकर; **ईदृक्**=इस प्रकार के; **मम**=मेरे; **इदम्**=इस; **व्यपेतभीः**=भयरहित हो जा; **प्रीतमनाः**=प्रीतियुक्त मन वाला; **पुनः**=फिर; **त्वम्**=तू; **तत् एव**=वही; **मे**=मेरे; **रूपम्**=रूप को; **इदम्**=इस; **प्रपश्य**=देख।

अनुवाद

मेरे इस भयंकर रूप को देखकर तू बिल्कुल व्याकुल और मोहित मत हो। हे भक्तशिरोमणि! भय से मुक्त होकर प्रीतिभरे मन से मेरे उसी रूप का दर्शन कर जिसके लिए तू इतना उत्कण्ठित है॥४९॥